आनन्दमग्न होकर सद्‌गुणों की खान बन जाएँ

१ जून, २०१९

आत्मीय पाठकगण,

आशीर्वादों से परिपूर्ण 'आनन्दमय जन्मदिवस' के माह का आगमन हो गया है। इस माह, सिद्धयोग पथ पर हम एक अलौकिक पर्व यानी हमारी परमप्रिय श्रीगुरु, गुरुमाई जी के जन्म का आनन्दोत्सव मनाते हैं। अपनी दिव्य उपस्थिति से वे कई हृदयों को उनके अपने सच्चे स्वरूप के प्रति जाग्रत करती हैं। 'आनन्दमय जन्मदिवस' के माह की जय-जय!

श्रीगुरुमाई के कृपापात्र होने के स्वर्णिम भाग्य से विस्मित हो, मेरा हृदय एक गीत गुनगुनाने लगा है जो मैं आपको बताना चाहती हूँ।

> मंगल ऋतु है छाई देखो, पावन बेला आई द्वार,
> थिरक रही है यह धरती पाकर शुभ चरणों की ताल,
> धन्य हुए हैं पवन-गगन सब, धन्य हुई प्रकृति की चाल।
> इहलोक में आए हो तुम कराने नौका सबकी पार,
> हाथों में दी डोर सत्य की, खोल दिए हिय के द्वार,
> गाएँ किस विध स्तुति? तुम्हारी करुणा अपरम्पार,
> पाकर प्रिय कृपा अहेतुक, धन्य हुए हमारे भाग।

साधकों के जीवन में, इस समय, इस माह का महत्त्व सचमुच अतुल्य है। प्रकाश-स्तम्भ के समान अपनी सिखावनियों द्वारा, गुरुमाई जी इस पथ पर हमारी यात्रा का मार्गदर्शन कर रही हैं।

'मधुर सरप्राइज़' २०१९ के अपने प्रवचन में, गुरुमाई जी हमें अपनी साधना में सद्‌गुणों को लागू करना सिखाती हैं ताकि इसके द्वारा हम अपने अभ्यासों की पुनरावृत्ति को नित नया व ताज़ा रख सकें। उन्होंने हमें अपनी साधना को ओजस्वी बनाए रखने के लिए यह स्वर्णिम कुंजी दी है, एक प्रभावशाली व शक्तिशाली माध्यम प्रदान किया है। इस माह के दौरान हमारे पास बिल्कुल ऐसा-ही करने का एक अद्वितीय अवसर है।

'आनन्दमय जन्मदिवस' का हर एक दिन "रत्न-समान" सद्गुण से अलंकृत है, जैसा कि गुरुमाई जी उन्हें अपने प्रवचन में सम्बोधित करती हैं। हर एक दिवस श्रीगुरुमाई द्वारा चुने गए सद्गुण की चमक से प्रदीप्त होता है जिससे हम उस पर मनन-चिन्तन करें व उसे विकसित करें। जब एक माणिक्य के किनारों पर प्रकाश की किरणें पड़ती हैं तो वह चमकने लगता है; ठीक वैसे ही जब सद्गुण हमारे कर्मों को छूते हैं तो वे उसकी कान्ति से जगमगाने लगते हैं।

मैं आपको आमन्त्रित करती हूँ कि आप इस माह, वैभवशाली सद्गुणों की शृंखला को आत्मसात् करें और हर सद्गुण को अपने कृत्यों में प्रतिबिम्बित होने दें। श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश का अध्ययन करते समय इसे अपना दैनिक अभ्यास बना लें; यह आपके मन को उसकी अपनी दीप्ति से जुड़ने में सहायता करेगा। हो सकता है कि आपमें से कुछ लोगों के पास हर सद्गुण के साथ कार्य करने का अपना विशिष्ट तरीक़ा पहले से ही हो। यह बहुत-ही अद्भुत है! और यदि नहीं है, तो आगे बढ़ें और ऐसी योजना बनाएँ जो आपके लिए कारगर हो।

***

इस माह जब आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखेंगे तो श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश के आपके अध्ययन को आगे बढ़ाने वाली पोस्टिंग के अतिरिक्त, इस अतिविशिष्ट माह का उत्सव मनाने के लिए आपको कुछ आनन्ददायक व प्रेरक पोस्ट भी मिलेंगी।

- **सद्गुण वैभव** — दिव्य सद्गुणों का ख़ज़ाना है, माह के हर दिन के लिए एक सद्गुण।
- **'मधुर प्रकाश, मधुर आनन्द'** — हृदयस्पर्शी छवियों का सुरम्य व्यवस्थापन जो हमारे हृदय को मोह लेगा।
- **Pick a Birthday Bliss Mango** — हर लिन्क पर क्लिक करने पर एक स्वादिष्ट दावत आपका इन्तज़ार कर रही है। वर्ष २०१२ से यह इन्टरएक्टिव पोस्ट अपनी लोकप्रियता के कारण, आपके आग्रह पर वापस आई है, तो बुज़ुर्ग या नौजवान सभी इसका मज़ा लें!
- **श्रीगुरुमाई के साथ नामसंकीर्तन** – श्रीगुरुमाई के नामसंकीर्तन की वीडिओ क्लिपिंग जसका 'आनन्दमय जन्मदिवस' के माह में हम सभी को इन्तज़ार रहता है।
- **Reflections on Gurumayi [रिफ़्लेक्शन्स् ऑन गुरुमाई]** – वर्ष २०१४ से चली आ रही इस सुन्दर परम्परा में, सिद्धयोगी 'आनन्दमय जन्मदिवस' का उत्सव मनाने के लिए श्रीगुरुमाई की

सिखावनियों व उनके साथ घटित प्रसंगों पर अपना चिन्तन-मनन लिखते हैं। अपनी मनन प्रक्रिया को प्रेरित करने के लिए वर्ष २०१९ से नए प्रसंग और पिछले वर्षों के प्रसंग भी पढ़ें।

- **ध्यान-सत्र ६ : *Enrich the Worth of the Sadguna in Your Life***
- **'मधुर सरप्राइज़ २०१९'** अब पहली बार इटालियन, पुर्तगाली और जापानी भाषा में उपलब्ध है!

***

यह शानदार माह, हमें वर्ष २०१९ में आधी दूरी तय करने के निशान पर भी लाता है। यह कितना सटीक सुअवसर है उस संकल्प पर लौटने का, जो आपने वर्ष के आरम्भ में बनाया था और यह देखने का भी कि श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश के आपके अध्ययन व अभ्यास ने इसे पूरा करने में आपकी अब तक किस प्रकार मदद की है। सद्गुणों से सराबोर और नई ऊर्जा से अनुप्राणित आपके प्रयत्न, आपकी साधना को पुनः नवीन करेंगे।

मेरी कामना है कि हर सद्गुण अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ स्वयं को आपके समक्ष उन्मीलित करे और आपके विचारों व आपके कृत्यों में समाहित हो जाए। *सद्गुण वैभव!*

मुझे सन्त-कवि, कबीर साहब का एक सुन्दर दोहा याद आ रहा है, जो मैंने गुरुमाई जी से सुना था। यह मुझे "रत्न-समान सद्गुणों" का विकास करने के लिए प्रेरणा व दृढ़-संकल्प से भर देता है।

> शीलवन्त सबसे बड़ा, सब रतनन की खान।
> तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन॥
>
> शीलवन्त [सद्गुणसम्पन्न] व्यक्ति सर्वोच्च होता है, वह सभी रत्नों की खान होता है।
> तीनों लोकों की सम्पदा शील [सद्गुणों] में समाई हुई है।

आदर सहित,

गरिमा बोरवणकर

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।